A–0293

Total Pages : 2 **Roll No. .....**

DVS-103

Diploma in Vastu Shashtra (DVS)

(ग्रहनिर्माण विवेचन)

Examination, June 2025

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 100

नोट :— यह प्रश्न-पत्र सौ (100) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) (2×26=52)

नोट :— खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए छब्बीस (26) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. गृहारम्भ निर्माण में विचारणीय विषयों का सविस्तार वर्णन कीजिए।
2. वास्तु शान्ति की विधि क्या है , इसके महत्व को प्रतिपादित कीजिए।
3. गृहारम्भ में पञ्चांग शुद्धि व लग्न शुद्धि का वर्णन कीजिए।
4. शिलान्यास विधि का वर्णन कीजिए।
5. दिशा के अनुसार राहुमुखपुच्छ का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न) (4×12=48)

नोट :— खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बारह (12) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. देवालय निर्माण में राहुमुखपुच्छ विचार का निर्णय कैसे किया जाता है ? इसका वर्णन कीजिए।
2. खातारम्भ में राहुमुखपुच्छ के फल को लिखिए।
3. वास्तुशास्त्र के अनुसार सप्तसकार योग का वर्णन कीजिए।
4. रामदैवज्ञानुसार पञ्चांश शुद्धि विचार का वर्णन कीजिए।
5. गृहारम्भ में काल शुद्धि विचार का वर्णन कीजिए।
6. गृहप्रवेश में कुम्भचक्र महत्व को प्रतिपादित कीजिए।
7. दिशाओं के अनुसार द्वारा के फलों का वर्णन कीजिए।
8. वास्तुशास्त्र पर संक्षिप्त लेख लिखिए।

****